

ब्रह्ममा सुगंधं कुलं हरं सर्ववत्तमावा स आ उ ह तस्यै सुप्रजने कुल कने उधारग
हिन ॥ ८९ ॥ ये पुत्रा स्वपितुर्वस्या सपिताये युपो यक ॥ तं मित्रं यस्य विश्वा सर्वं स्वभा
व्या यत्र निर्दृति ॥ ९० ॥ बाबुकावस्य मारुहस्या जो ह नृ छोरा भव्या को वरि हो पाल
न्या पो स्या कन बाबु भै नृ न स्ते उ विश्वा सग न्या को ह त्पो मित्र हो जो आ पूरा व
स्य मा ह त्पो स्वास्त्रि हो ॥ ९० ॥ यस्य जिवति जिवति विप्रा मित्रो अर्धं वा भुवा ॥ स
फलं जि विनीतस्य आत्मा र्धं क्रो न जिवति ॥ ९१ ॥ जत्का जि दुदाया स्वरा मित्र वा
धव जि उ छव सफ जि उ नु ते स्को हो आकु नात्र जि उ दो पो ल्दे न ॥ ९१ ॥ सजिव

६१ निष्कलंतस्य जीवितं

निगुणा यस्य यस्य धर्मं मतिवति ॥ गुणधर्मविहितस्य विधिः ॥ ६२ ॥ जसमनुस्य
कृते गुणार्थं नहुया ॥ तेषां जिह्वा ह्यनु गुणा पति धर्मं पति नहुया मनुया ॥ मया को
होमनिजानु ॥ ६३ ॥ वाचा सरस्वति यस्य भार्या रूपं कीति सति ॥ तस्मिन्त्यागवाते
यस्य सफलं तस्य जिवितं ॥ ६४ ॥ मत्का सुखं मा सरश्चति ॥ छन्द ॥ धारणा ॥ गुण
रित्ति ॥ छन्द ॥ दानं गते सामर्थ्यं को तस्मिन् छन्द ॥ तजिया को सा फल्यहु ॥ ६५ ॥
धर्मार्थं कामं मोक्षात् यस्यैकोपि न विदति ॥ अजागरत नश्चैव निरर्थं तस्य
जिवितं ॥ ६६ ॥ जसमनुस्य धर्मं अधर्मं कामं मोक्षात् एति वारथो कमा यकैथो

कुच
३७